इहाँ लगे कतेब की, चरचा में न चित ।
कलमा से हासिल किया, लिया मुहम्मद मता इत ॥१॥

मेड़ते तक कुरान के विषय पर चर्चा करने का कोई ध्यान ही नहीं था । बांग से कलमे को सुनने के पश्चात् कि कुरान में महंमद साहब जो पैगाम लाये हैं, उसमें सब हमारी ही बातें होंगी । इसलिये कुरान के उस विषय को अपने चित्त में लिया ।

लालदास को कहूया, आज एक बात पाई ।
तब अरज करी लालदास ने, ए हमको देओ दिखाई ॥२॥

तब श्री जी ने श्री लालदास जी से कहा कि आज एक नई बात मिली है । तब लालदास जी ने अर्ज की कि हे धनी ! मुझे भी बताइये ।

तब बात कलमें की, कर दिखाई सब ।
मुहम्मद कुरान ल्याये, सब तुमारा मतलब ॥३॥

तब श्री जी ने कलमे का कुल अर्थ करके समझाया कि ला इलाह अल्लाह को ही तो हमारे तारतम ज्ञान में क्षर, अक्षर और अक्षरातीत कहा गया है अर्थात् कलमा और तारतम एक ही है । महंमद साहब जो कुरान लाये हैं उसमें निश्चित ही सब ब्रह्मसृष्टियों का, परमधाम का तथा श्री राज जी महाराज का ज्ञान होगा ।

इत महम्मद सों मिल चले, तब अहमद पाया खिताब ।
ईसा और महम्मद मिले, मारे दज्जाल सिताब ॥४॥

यहां से महंमद साहब की शक्ति ने जब प्रवेश किया तो श्री जी आप पूर्णब्रह्म अक्षरातीत की शोभा को प्राप्त हुए । ईसा श्री श्यामा जी (तारतम के स्वरूप) तथा महंमद साहिब (कलमे के स्वरूप) जब अन्दर विराजमान हो गये तो फिर हिन्दू-मुसलमान में विरोध फैलाने वाली दज्जाल की शक्ति को मारना कुछ कठिन नहीं है ।

अब लड़ाई करने को, जाइये पास सुलतान ।
इनको प्रथम दावत करें, ए ल्यावे ईमान ॥५॥

अब औरंगजेब बादशाह, जो अपने को कुरान का ज्ञाता (आलिम फाजल) समझता था, सबसे पहले उसको जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान से सारी हकीकत की पहचान करायें तो वह निश्चित ही पहचान होते ही ईमान ले आयेगा ।

Nijanand App

श्री देवचन्द्र जी ने कही थी, आवे सकुण्डल सकुमार ।
तब खेल देख पीछे फिरें, पहुंचे परवरदिगार ॥६॥

यह बात श्री देवचन्द्र जी ने भी कही थी कि जब साकुण्डल और साकुमार पहचान करके धनी के चरणों में आ जायेंगे तभी ब्रह्मसृष्टि वापस अपने घर चलेगी ।

तिस वास्ते ढूंढ काढ़िये, ए लीला होए जाहिर ।
कुली दज्जाल को मारिये, करत बदफैली बाहिर ॥७॥

इसलिये अब साकुण्डल और साकुमार की आतम को हमें ढूंढ़ना चाहिये । जिससे अखंड परमधाम का यह ज्ञान भी दुनियां में जाहिर हो जायेगा तथा उससे हिन्दू और मुसलमानों में आपस में अज्ञानता के कारण धर्म के नाम पर जो विरोध है वह समाप्त हो जायेगा ।

प्रमाण : जो कछु कह्या कतेब ने, सोई कह्या वेद ।
दोऊ बन्दे एक साहेब के, पर लड़त बिना पाये भेद ॥

खुलासा १२/४२

ब्राह्मण कहे हम उत्तम, मुसलमान कहें हम पाक ।
दोऊ मुट्ठी एक ठौर की, एक राख दूजी खाक ॥

सनंध ४०/४२

तब साथ सब को, होवेगी खबर ।
दौड़ेंगे आप अपनी, आए मिले आखर ॥८॥

इस हकीकत के ज्ञान का प्रचार जिसमें कलमा और तारतम अर्थात् हिन्दू-मुसलमान के ज्ञान को मिला कर प्रचार करेंगे तो ब्रह्मसृष्टि की जागनी होगी । इस निजानन्द सम्प्रदाय की हकीकत के इस ज्ञान का प्रचार-प्रसार होने से अपनी-अपनी पहचान करके आखिर श्री जी के चरणों में मिल जायेंगे ।

ए विचार करके, मेरते से चले जब ।
गोकुल मथुरा आगरे, आए पहुंचे तब ॥९॥

यह विचार करके सब सुन्दर साथ को लेकर मेड़ते से चले और आगरा मथुरा होते हुए गोकुल पहुँचे।

कोई दिन तहाँ रह के, दिल्ली पहुंचे धाए ।
कितनाक साथ ठटे का, इत पहुंचा आए ॥१०॥

कुछ दिन वहां रह कर फिर शीघ्र ही दिल्ली आ गए तो कुछ सुन्दर साथ ठट्ठे से दर्शन के लिए दिल्ली आकर मिले ।

Nijanand App

हरि राम चौधरी, और चिन्तामन लालमन ।
और रामचन्द्र आये पहुंचे, रहे कोइक दिन ॥११॥

हरि राम चौधरी, चिन्तामणि, लालमन और रामचन्द्र दिल्ली पहुंचे । कुछ दिन वे यहां सुन्दर साथ में रहे ।

ईश्वर दास चोबदार, ए रह्या बरस दोए ।
पीछे माया लहर में, रह न सक्या सोए ॥१२॥

ईश्वर दास और चोबदार दो वर्ष श्री जी के साथ रहे । फिर घर-बार की याद आई और वापिस चले गए ।

मलूक चन्द भली भाँत सों, लड़ा दज्जाल सो जोर ।
सौंपी अपनी आतम, कछु न आई खोर ॥१३॥

मलूक चन्द ने अच्छी तरह श्री जी के स्वरूप की पहचान करके दिल्ली में औरंगजेब को पैगाम देने के समय में पूर्ण यकीन के साथ सहयोग दिया तथा किसी भी प्रकार की कमी नही रखी ।

सेखबदल आइया, नीके ग्रहे कदम ।
लड़ा दज्जाल सों सनमुख, और न मारी दम ॥१४॥

जब आप श्री जी दिल्ली में थे तो शेखबदल ने श्री जी के मुखारविंद से कुरान के द्वारा मोमिनों की, परमधाम की और श्री राजजी महाराज की पहचान करके चरणों में शीश झुकाया तथा मुसलमान होने पर भी शरीयत के विरूद्ध औरंगजेब को हकीकत की पहचान के लिए पूरा समर्पित हुआ और कोई कमी नही रखी ।

अनन्तराम आये मिला, लड़ाई के बखत ।
सेवा में सामिल रह्या, समय पाया इत ॥१५॥

अनन्तराम भी शरीयत को छोड़कर युद्ध के समय श्री जी के चरणों में आया तथा उसको भी इस समय की सेवा में सहयोग देने का अवसर मिला ।

तुलसी बिहारी दास, और हिरदे राम ।
कोइक दिन सामिल रहे, फेंर घरों किया बिसराम ॥१६॥

तुलसी, बिहारीदास और हृदयराम ये तीनों भी कुछ दिन दज्जाल की इस लड़ाई अर्थात् शरीयत को पैगाम देने के कार्य में शामिल रहे । फिर घबराकर वापस घर चले गए ।

Nijanand App

ए जो हरिराम भाई का, बेटा हीरानन्द ।
कोइक दिन रह्या सेवा मिने, पीछे पहुंचा अपने वतन ॥१७॥

हरीराम भाई का बेटा हीरानन्द भी कुछ दिन दिल्ली में आकर इस सेवा में शामिल रहा, फिर वह अपने घर चला गया ।

भाई श्री मुकुन्ददास ने, सुन्या सूरत में तारतम ।
आये पहुंचे सैयद की हवेली में, जाग खड़ी आतम ॥१८॥

भाई मुकुन्ददास जी, जिन्होंने सूरत में तारतम सुना था, वे भी दिल्ली में सैयद की हवेली में, श्री जी के चरणों में पहुंचे । तारतम और कलमे की हकीकत एक ही है, उस ज्ञान को सुनकर उसकी भी आतम जाग्रत हो गई ।

रामचन्द्र मेड़ते से, पहुंचा इन सोहबत ।
कोइक दिन रहके, फेर घर किया इत ॥१९॥

रामचन्द्र भाई मेड़ते से चलकर दिल्ली में श्री जी के चरणों में पहुंचे । कुछ दिन रहने के बाद उन्होंने दिल्ली में ही अपना घर बना लिया ।

और साथी केतेक, आए के गये अपने घर ।
पर बात न छूटे दिल से, रहे इसलाम ऊपर ॥२०॥

और कई साथी श्री जी के चरणों में आए तथा माया की मजबूरी के कारण वापस घर चले गए किन्तु उन्होंने चित्त धनी के चरणों में ही लगाए रखा तथा श्री निजानन्द सम्प्रदाय पर यकीन बनाए रखा ।

केतेक मुनकर हुये, सो पैठ न सके इसलाम ।
जो मुँह नीचा करे साथ, कोई न कहे कलाम ॥२१॥

कई सुन्दरसाथ कुरान और महंमद का नाम सुनकर श्री निजानन्द सम्प्रदाय को ही छोड़कर चले गए। धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि जो एक बार ईमान लेकर फिर मुनकरी करे, उससे कभी प्रणाम भी नहीं करना ।

कोई दिन पीछे आइया, गोवरधन अटक से ।
लाल दरवाजे आए रह्या, गंगाराम की दुकान में ॥२२॥

श्री जी दिल्ली में कुरान के अनुसार शरीयत वालों को आखरूल जमां ईमाम मेंहदी के आने का पैगाम देने में लगे हुए थे कि इतने में गोवर्धन दास जी अटक से वापस आये । लाल दरवाजे मोहल्ले में वे गंगाराम जी की दुकान पर उनसे मिले ।

Nijanand App

तहां बचन तारतम के, कहे जो गंगाराम ।
आसाजीत परबोधिया, तित पाया बिसराम ॥२३॥

गोवर्धन दास जी ने वहां गंगाराम तथा आसाजीत को जाग्रत बुद्धि के तारतम ज्ञान की चर्चा सुनाई तो उन दोनों को ईमान आ गया तथा मन की शान्ति मिली और वे दोनों निजानन्द सम्प्रदाय में आ गए।

नैनसुख महाजन सों, कहें वचन दो चार ।
तिनने अपने दिल में, किया बड़ा विचार ॥२४॥

तब गोवर्धन दास जी ने नैनसुख महाजन से भी चर्चा की । उसने भी अपने दिल में बहुत सोच-विचार किया ।

फिरते उर्दू बाजार में, मिले गरीबदास ।
धाय के तिनको मिले, पूछी खबर खास ॥२५॥

श्री जी से मिलने के लिए श्री गोवर्धन दास जी दिल्ली में खोज कर ही रहे थे कि उर्दू बाजार में गरीबदास जी को देखा और तुरन्त दौड़कर उनसे मुलाकात करके श्री जी के बारे में पूछा ?

कहाँ साथ रहत है, श्री जी आप हैं कित ।
मैं अपनें साथ को, लेकर आऊं इत ॥२६॥

श्री जी साहेब कहां पर विराजमान हैं तथा सुन्दरसाथ कहां पर रह रहे हैं ? मैंने भी दिल्ली आकर कई सुन्दरसाथ को जगाया है । मैं उनको भी लेकर श्री जी के चरणों में आ जाऊंगा ।

पूरे विट्ठल गौर के, सैयद की हवेली में ।
तहाँ श्री जी रहत हैं, मैं खबर करों इनसें ॥२७॥

तब गरीबदास जी ने बताया कि आप श्री जी विट्ठल गौर के पुरे में सैयद गौर की हवेली में विराजमान हैं । मैं भी उनको आपके आने की सूचना दे दूंगा ।

गोवरधन अपने घर गया, आया गरीबदास ।
खबर करी श्री राज सों, आया गोबरधन खास ॥२८॥

श्री जी की सूचना प्राप्त करके गोवर्धन दास जी वापस अपने ठिकाने गये तथा गरीबदास जी ने श्री जी को गोवर्धन जी के आने की सूचना दे दी ।

Nijanand App

ब्रत समै गोवरधन, ल्याया अपने संगी मिलाए ।
सब आए कदमों लगे, बीतक कही बनाए ॥२९॥

तब दूसरे दिन प्रातःकाल चितवनी के समय में अपने साथियों को लेकर गोवर्धन दास जी ने श्री जी के चरणों में शीश झुकाया और अपनी सारी आपबीती कही ।

इन हवेली में आप, मास छः रहे ।
तहाँ से लाल दरवाजे को, ले चला उत के ॥३०॥

आप श्री जी साहिब सुन्दरसाथ के साथ ६ महीने तक सैयद की हवेली में रहे । फिर लाल दरवाजे का एक सुन्दरसाथ श्री जी को वहां ले गया ।

इहाँ आए सकुमार को, पाती लिखी बनाए ।
बाईस प्रस्न तिन में, लिखे चित सों ल्याए ॥३१॥

यहां आकर आप श्री जी और श्री लालदास जी ने मिल कर साकुमार (औरंगजेब) को ग्यारहवीं सदी में इमाम मेंहदी के आने के विषय में कुरान के प्रमाणों से बाईस प्रश्न बहुत सोच विचार कर बनाये ।

इन पाती लिखने में रहें, श्री जी और लालदास ।
रात दिन मेहनत करी, श्री राज सेवन की आस ॥३२॥

इन २२ प्रश्नों को तैयार करने में श्री जी और लालदास जी ने कुरान में से खोज कर पाती लिखी ताकि साकुमार बाई की आतम जागृत हो जाय तथा सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी का फुरमान पूरा हो जाय।

ए पाती लेइ के, आये लाल दरवाजे ।
हवेली छत्रीय की, तिन में रहे आये ॥३३॥

लाल दरवाजे के क्षत्रिय की हवेली में आकर रहे और वही बैठकर पाती लिखने के कार्य को पूरा किया।

तहां आए बैठ के, बड़ी करी मसलहत ।
पूछा विचार सब को, कहा करनो अब इत ॥३४॥

लाल दरवाजे में क्षत्रिय की हवेली में बैठ कर सब सुन्दरसाथ से खूब विचार-विमर्श किया कि अब इस पाती को औरंगजेब तक पहुंचाने के लिए हमें क्या करना चाहिए ।

आसाजीत आइया, लगा श्री राज के कदम ।
तब ए बिचार पूछिया, कहा करनो अब हम ॥३५॥

इतने में आसाजीत वकील, जो अपने सुन्दरसाथ थे, वे श्री जी के चरणों में आये तो उनसे भी यह विचार पूछा गया कि औरंगजेब तक इस पाती को पहुंचाने के लिए हमें क्या करना चाहिए ।

Nijanand App

तब आसा जीत को, पाती पढ़ सुनाई ।
सुनके उन उत्तर दियो, ए पाती क्यों दिखाई ॥३६॥

आसाजीत के कहने पर इस पाती के प्रश्न जो हिन्दी लिपि में लिखे थे उसे पढ़ कर सुनाये गये तो उसने कहा कि हिन्दी लिपि में होने के कारण औरंगजेब के दरबार में इसे कोई भी नहीं लेगा ।

ऐ तो हिन्दुअन का, हमेसा रहत दुसमन ।
प्रात को मुंह ना देखहीं, ए आप कहावत मोमिन ॥३७॥

क्योंकि औरंगजेब अपने को मोमिन समझता है तथा हिन्दुओं को काफिर अर्थात् दुश्मन समझता है इसलिये प्रातः उठ कर वह किसी हिन्दू का मुख भी नहीं देखता है तो यह पत्र उस तक कैसे पहुंचेगा ।

सो पाती हिन्दवी की, क्यों कर सुने कान ।
सरियत है जोरावर, है पोहोरा मुसलमान ॥३८॥

मुसलमानों का राज्य है । शरीयत का अमल है । इसलिये हिन्दी भाषा के किसी भी पत्र की वहां पर सुनवाई नहीं होती है ।

मास दोय इहाँ रहे, होए चरचा वेद वेदान्त ।
ऊपर अटारी के, बैठत हैं एकान्त ॥३९॥

दो महीने तक उस हवेली में रहे परन्तु उस हवेली के ऊपर अटारी में हिन्दू शास्त्रों के ग्रन्थों से ही सुन्दरसाथ को चर्चा सुनाते हैं ।

इत सूफी एक आवत, चरचा सुनाई ताए ।
मीठी लगी तिन को, लालच को इत आए ॥४०॥

यहां एक सूफी ने भी श्री जी की चर्चा को सुना तो उसे वह ज्ञान तो बहुत अच्छा लगा लेकिन वह किसी सांसारिक लोभ के कारण से आता था ।

दयाराम दिल प्रेम सों, इत आया तिन ईमान ।
ल्याया सबके देखते, है खास सैयों में जान ॥४१॥

दयाराम जी दिल्ली के रहने वाले एक सुन्दरसाथ थे । श्री जी के मुखारबिन्द से चर्चा सुनकर तारतम लिया । ये खासल खास ब्रह्मसृष्टि थे ।

Nijanand App

दया राम को ल्याईया, ऐ जो भाई नैन सुख ।
सुख दयाराम जो पाईया, सो कहो न जाए मुख ॥४२॥

दया राम जी को श्री जी के चरणों में नयन सुख भाई लेकर आये थे । चर्चा सुनकर पूरी पहचान करके उन्हें जो सुख प्राप्त हुआ वह इस मुख से कहा नही जा सकता ।

चंचल आगे चरचा, करी जो दया राम ।
यह भी ईमान ल्याईया, बड़ा पाया बिसराम ॥४३॥

दया राम के पड़ौस में ही चंचल दास रहते थे । दयाराम जी ने जब उनको क्षर अक्षर अक्षरातीत का ज्ञान सुनाया तो यकीन आने के बाद तारतम लेने पर उन्हें भी शान्ति प्राप्त हुई ।

हरप्रसाद हरकरन, चरचा सुनी न किनके मुख ।
इन दोऊ भाइयों को, ल्याया बीच इन सुख ॥४४॥

हरप्रसाद और हरकरन इन दोनों भाईयों ने कहीं भी परमात्मा के ज्ञान की चर्चा सुनी नहीं थी, इनको भी दयाराम जी श्री जी के चरणों में ले आये ।

ए दोऊ भाई प्रेम सों, चरचा छिपके सुनते ।
ईमान पूरा ल्याये, पर बड़कों से डरते ॥४५॥

ये दोनों भाई बड़े भाव और निष्ठा के साथ श्री जी के मुखारबिन्द से चर्चा सुनते थे और ईमान भी पूरा लाये थे परन्तु बड़ों से छिप कर ही चर्चा सुनने आते थे ।

और भिखारी दास नें, कछु चरचा सुनी ।
ऊपर की पहचान सों, सेवा करी अपनी ॥४६॥

दिल्ली में भिखारी दास ने भी चर्चा सुनी । थोड़ी ही पहचान से वह सेवा में शामिल हुए ।

श्री राज को घरों पधराए के, अरूगाया थाल ।
साथ सब की सेवा करी, होए के दिल खुसाल ॥४७॥

भिखारी दास जी ने श्री जी और सुन्दरसाथ को अपने घर पधराया और भोजन आरोगाने की सेवा करके बहुत खुश हुए ।

गंगाराम आवत, खाली हाथों न कब ।
पावें भली वस्त बाजार में, राज आगे धरे सब ॥४८॥

गंगाराम कभी भी खाली हाथ श्री जी के चरणों में नहीं आते थे । जो भी वस्तु बाजार में उत्तम से उत्तम मिलती थी, उसे वह लाकर श्री जी के चरणों में रखते थे ।

Nijanand App

दयाराम आवत, ल्यावें मिठाई पकवान ।
नये नये मेवे लेय के, ल्यावत दिल ईमान ॥४९॥

दयाराम जी पूर्ण ईमान के साथ हर रोज मिठाई पकवान तथा मौसम के अनुसार मेवे पूरे सेवा-भाव के साथ लेकर आते थे ।

चंचल अपनी दूकान से, ल्यावत कर चोरी ।
ल्यावें श्री राज के वास्ते, अंग उमंग करी ॥५०॥

चंचल दास जी अपने दिल में उमंग लेकर श्री राजजी की सेवा के लिए अपनी दुकान से बादाम, किशमिश, काजू इत्यादि चोरी करके लाते थे क्योंकि उनके पिताश्री धर्म के लिए सेवा करना अच्छा नहीं समझते थे।

कुटुम्ब कबीला लड़ते, बरजत रहे हमेस ।
तिनका मोंह मार के, काहू न गिनत खेस ॥५१॥

चंचल दास जी के कबीले वाले हमेशा ही उन्हें श्री जी के चरणों में जाने से मना करते थे तथा लड़ते भी थे किन्तु वे श्री जी के चरणों में अवश्य आते थे और किसी की भी परवाह नहीं करते क्योंकि जो धनी के चरणों में रूकावट डाले उससे कैसा रिश्ता ?

रामचन्द पंसारी नें, करी उपली पहिचान ।
खिजमत अपने माफक, करी ऐसी जान ॥५२॥

रामचन्द्र पंसारी को भी चर्चा सुनने के पश्चात् कुछ पहचान हुई । उतने ही भाव से उसने भी सेवा की ।

महाजन जेठा वेदान्ती, चरचा सुनता कान ।
सुकन भले चीनता, पर छूटा न सुंन मकान ॥५३॥

जेठा महाजन जो वेदान्त पक्ष को मानने वाला था, श्री जी की चर्चा को सुनकर अच्छी तरह से जानकारी भी रखता था । वह निराकार के सिद्धान्त कर्मकाण्ड को नही छोड़ सका, इसलिए भव से पार नहीं हो सका ।

अब ए विचार करने लगे, क्यों ए बात सुने सुलतान ।
इत बैठे ना बनत, बड़ा अमल सैतान ॥५४॥

बहुत परिश्रम करने पर भी जब औरंगजेब के दरबार में पत्र नही भेजा जा सका, तब श्री जी ने सोचा कि यहां पर बैठे-बैठे इस शरीयत के राज्य में औरंगजेब तक पैगाम पहुंचाना बहुत ही कठिन है ।

Nijanand App

कोइक जागा पकड़ के, लड़ें इनसे हम ।
वचन इने सुनावनें, कहो इलाज कोई तुम ॥५५॥

दिल्ली को छोड़कर किसी और स्थान पर बैठकर औरंगजेब को किस तरह से कुरान से पैगाम भेजें। इस विषय पर सब सुन्दरसाथ से विचार-विमर्श किया ।

ऐसा विचार करके, दिल्ली से चले जब ।
साहजहानपुर बोड़िया मिने, आये पहुंचे तब ॥५६॥

सब सुन्दरसाथ से विचार-विमर्श करने के बाद दिल्ली को छोड़कर श्री जी इस कार्य के लिए शाहजहाँपुर बोड़िया आए ।

केतेक साथ दिल्ली मिने, राख के आप चले ।
हम लेंइगे पीछे ते खबर, जाएंगे उस जगे ॥५७॥

महिला सुन्दरसाथ तथा बूढ़ों को श्री जी ने दिल्ली की हवेली में ही छोड़ा और कहा कि हम इस कार्य के लिए जहां कहीं भी जाएंगे, वहां से पत्र व्यवहार द्वारा आपका समाचार लेते रहेंगे ।

महामत कहें ऐ साथ जी, याद करो धनी तुम ।
उतरी मेहर हक से, जगाओ अपनी आतम ॥५८॥

अब आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! पल-पल श्री कुलजम स्वरूप की वाणी का मथन कर के अपने धाम धनी को याद कीजिए । इस वाणी से ही आतम जाग्रत होगी । क्योंकि सब पर धनी की मेहर बरस रही है ।

(प्रकरण ३४, चौपाई १६१४)

इन समय सूरत से, आया लक्ष्मीदास ।
रूपा बाई को लेइ के, बेटी जमुना खास ॥१॥

इस समय सूरत से लक्ष्मीदास अपनी धर्मपत्नी रूपा बाई तथा बेटी जमुना को लेकर दिल्ली पहुँचे ।

और भाई नारायण दास, और गोविन्द जी दास ।
रामबाई को लेइ के, दिल राज चरन की आस ॥२॥

नारायण दास और गोविन्द दास अपनी धर्मपत्नी रामबाई को लेकर श्री जी के दर्शनों की चाहना से दिल्ली में पहुंचे ।

Nijanand App